RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 26 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 1 दिसम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

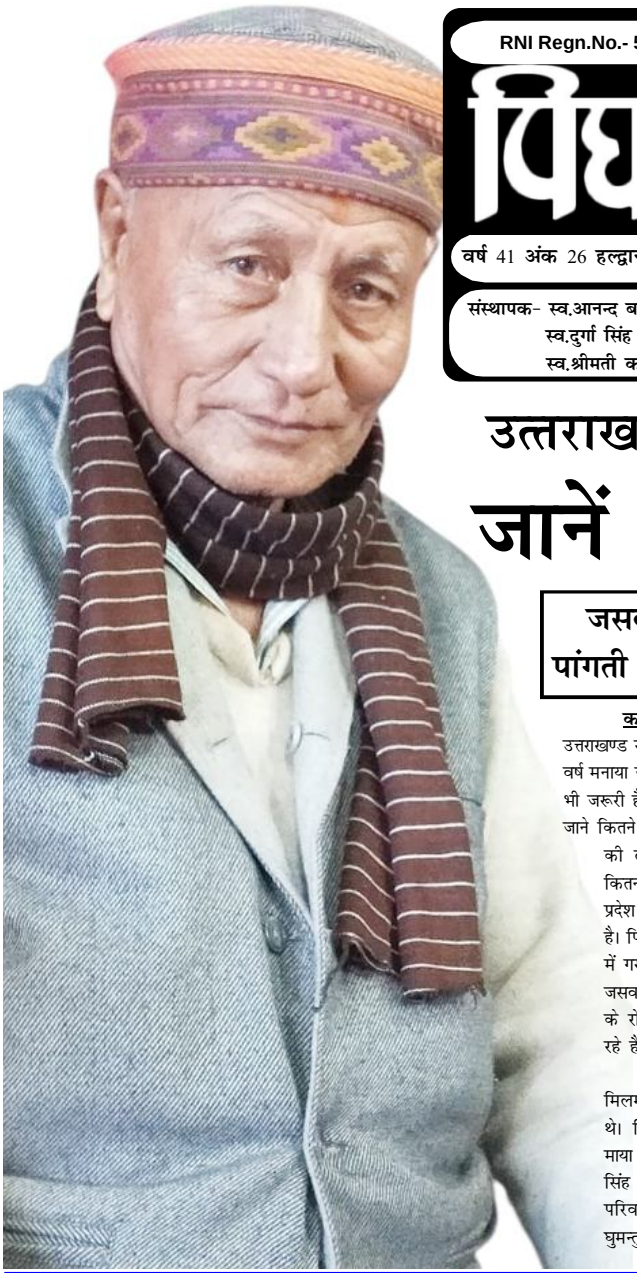

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना रजत जयन्ती वर्ष

जानें धुर्मा देवता की कहानी

जसवन्त सिंह पांगती से बातचीत

स्मरण- गरुड़ के पुराने व्यापारी महिमन सिंह

धरमसिंह/धुर्मा देव मिलम में बैठे हैं

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना का रजत जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है, ऐसे में यह जानना भी जरूरी है कि इस पर्वतीय भूमि ने न जाने कितने रजत वर्ष देखे हैं और यहाँ की लोक परम्पराओं के अलावा कितनी उथल-पुथल इस पर्वतीय प्रदेश और यहाँ के कारोबार में हुई है। पिघलता हिमालय के इस अंक में गरुड़ के व्यवसायी 80 वर्षीय जसवन्त सिंह पांगती से बातचीज के रोचक प्रसंग प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

जसवन्त सिंह जी के दादा मिलम निवासी लाल सिंह पांगती थे। पिता केशर सिंह और माता माया देवी की सन्तानों में- जसवन्त सिंह और हरेन्द्र सिंह हुए। इनका परिवार माइग्रेशन प्रक्रिया याने घुमन्तु की स्थिति में था। मिलम जोहार, दरकोट मुनस्यारी और रसिया बगड़ में मौसम के अनुरूप आना-जाना था। ऐसे में जसवन्त सिंह जी की पढ़ाई भी माइग्रेशन स्कूल में हुई और वह हाईस्कूल तक पढ़ सके। माता के असमय निधन के बाद जिन पारिवारिक स्थितियों में यह लोग रहे होंगे वह कठिन दौर था। सन् 1965 में आर्मी में भर्ती होने के बाद 5 साल नौकरी की और फिर छोड़ दी। इसी प्रकार इनके भाई हरेन्द्र सिंह ने भी आईटीबीपी में 8 साल नौकरी करने के बाद घर वापसी कर ली। सन् 1962 में इस परिवार का रसियाबगड़ में व्यवसाय था।

बागेश्वर जिले के गरुड़ में कुमाऊँ गढ़वाल के व्यापारियों की आवत-जावत बराबर थी। जसवन्त सिंह जी बताते हैं कि महिमन सिंह पांगती गरुड़ के पुराने व्यापारियों में थे, जिनके सुपुत्र डीएफओ स्व. हीरा सिंह जी थे। इन्होंने हल्द्वानी के भोटिया पड़ाव में भी सबसे पहले मकान बनाया था। 1933-34 की बात रही होगी तब चाचा स्व. विजय सिंह पांगती की कपड़े की दुकान भी थी। पिता केशर सिंह जी भेड़-बकरी लेकर आते थे। उन दिनों में महिमन सिंह जी के संरक्षण में ही यह मकान- दुकान खरीद की। गरुड़ के पुराने व्यापारियों में चन्द्र सिंह पांगती भी थे, जिनका परिवार आज भी व्यवसाय कर रहा है।

जीवन के उत्तरार्द्ध में बचपन की अनगिनत यादों के साथ श्री पांगती बताते हैं कि तिब्बत व्यापार जाने वालों को धार तक विदा करना और वापसी पर लेने जाते समय का दृश्य आज भी उनकी यादों में है। भारत-चीन युद्ध बाद व्यापार की वह परम्परा टूटते ही इनके परिवार का पूरा ध्यान रसियाबगड़ में कारोबार पर था। इसके बाद गरुड़ का रुख हुआ।

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

गीता : भारत के अनेकान्त दर्शन का महाग्रन्थ

सूर्यकान्त बाली

गीता दुनिया भर के लिखे सामान्य ग्रन्थों जैसा नहीं है। श्लोक इसमें बेशक थोड़े से ही हैं, करीब सात सौ। पर अपने इन थोड़े से श्लोकों के बावजूद यह एक महाग्रन्थ है जिसने हमारी सभ्यता को एक जीवन दर्शन दिया है, जिन्दगी बिताने का एक सलीका समझाया है और विश्व में हमें गौरव प्रदान कराया है। गीता के टीकाकार और ज्ञाता कहते हैं कि इसमें तीन मार्गों का विवेचन है- ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग और शक्ति मार्ग। इस दृष्टि से देखें तो गीता का स्वाभाविक अन्त उसके बारहवें अध्याय में नजर आतने लगता है। दसवें अध्याय में कृष्ण अपनी दिव्य विभूतियों का वर्णन कर चुके हैं और बारहवें में वे वर्णन करते हैं कि उन्हें कौन सबसे अधिक प्रिय है और फिर भक्त की विशेषताओं का वर्णन करते हुए वे उसे अपना सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति बताते हैं। इस अध्याय के अन्तिम श्लोक में तो वे इस हद तक कह देते हैं कि जो 'भक्त श्रद्धापरायण हो कर मेरे इस धर्म्यामृत का निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं वे मुझे अतिशय प्रिय हैं।'

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्त। पर्युपासते,
श्रद्धाना मत्परमा भक्तासोतीव मे प्रिया:।

इस बारह अध्यायों की ज्ञान, धर्म, कर्म और भक्तिगंगा के एकदम बाद शेष छह अध्यायों में ऐसे-ऐसे विषयों का वर्णन है जिनका भक्ति, ज्ञान या कर्म किसी भी मार्ग से कोई सीधा रिश्ता नजर नहीं आता। अध्याय 13 में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का, 14 में सत्व, रजस् और तमस् इन तीनों गुणों का, 15 में पुरुषोत्तम योग का, 16 में दैवी और आसुरी सम्पदा का, 17 में तीन तरह की श्रद्धा का और 18 में मोक्ष, सन्यास योग का विश्लेषण है। इस बारे में हमें कुछेक बातें कहनी हैं। एक यह कि अर्जुन विषाद योग के साथ जैसा सम्बन्ध पहले बारह अध्यायों में भक्ति, ज्ञान और कर्म के विवेचन के रूप में बन पड़ा है, वैसा रिश्ता अन्तिम छह अध्यायों के विषयों का नहीं बन पाया। कहने को कह सकते हैं कि ये 'ज्ञान' और कर्म के विवेचन के रूप में बन पड़ा है, वैसा रिश्ता अन्तिम छह अध्यायों के विषयों का नहीं बन पाया। कहने को कह सकते हैं कि ये 'ज्ञान' के विषय हैं- कैमिस्ट्री और ज्योतिष भी। पर सवाल तो यह है कि किस ज्ञान के पूछे और बताए जाने का सन्दर्भ क्या है। दूसरी बात इसके बाद यह कहनी है कि पहले और दूसरे अध्यायों में अर्जुन ने जो सवाल पूछे उनके जवाब पहले बारह अध्यायों में अर्जुन को पूरी तरह से मिल जाते हैं। इसलिए तीसरी बात यह लगती है कि कृष्ण-अर्जुन सम्वाद के साथ जुड़ जाने से मिल जाने वाली प्रामाणिकता (या खुद व्यासवेद) ने, जैसा कि हम पहले भी इशारा कर आए हैं, अपने समय में प्रचलित विभिन्न वादों व विचारों को गीता में समाविष्ट कर लिया हो। अगर इन सभी बातों में तर्क का थोड़ा सा भी बल नजर आता हो तो चौथी बात निष्कर्ष के रूप में यह सामने आती है कि चूँकि आखिरी छह अध्यायों के विषय में गीता के मुख्य कथ्य का स्वाभाविक हिस्सा नजर नहीं आते, इसलिए हैरानी नहीं कि कि लोकचर्चा का स्वाभाविक हिस्सा आज तक भी, नहीं बन पाए हैं। विद्वानों की संगोष्ठियों की बात हम नहीं कर रहे। पर लोगों की जुबान पर जैसी गीता के निष्काम कर्मयोग की, शरणागति वाले भक्तियोग की और शरीर रूपी चोला बदलने वाले आत्मा सम्बन्धी ज्ञान योग की आम चर्चा रहती है, वैसी क्षेत्र क्षेत्रज्ञ जैसे उन विषयों की कहाँ रहती है जो अन्तिम छह अध्यायों में लिखे गए हैं? इसलिए कभी गीता का ध्यान से पारायण करें तो आप पाएँगे कि जो तार बारहवें अध्याय के आखिरी श्लोक (येतु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं इत्यादि) से टूटता है तो भाँति-भाँति के विषयों का विवेचन करने के बाद वह अचानक फिर जा कर अन्तिम अध्याय के श्लोक (संख्या 65) 'मन्मना भव भदभक्तो/ मद्याजी मां नमस्कुरू/मामेवैष्यसि सत्यं ते/प्रतिज्ञाने प्रियोसि में' से जुड़ पाता है। जिसका अर्थ है कि मेरे में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे लिए यज्ञ कर, मुझे नमस्कार कर और तू निश्चिन्त ही मुझे पा लेगा, वह मेरी प्रतिज्ञा है। अगर बीच के छह अध्यायों को एक ओर रख कर आप अठारहवें अध्याय के आखिरी बारह श्लोकों (65-78) को बारहवें अध्याय में ही रख दें, तो साफ जाहिर होगा कि गीता को जो कहना था, जिनके लिए गीता विख्यात है और उसके जो सन्देश भारत ही नहीं दुनिया भर के लोगों के जहन का हिस्सा बन गया है, वह सब बारहवें अध्याय तक आ गया है। बाद के छह अध्याय कुछ और ही नजर आते हैं। वे कृष्णार्जुन सम्वाद का सहज और प्रसंगस्फूर्त हिस्सा नजर नहीं आते। कहीं आगे चल कर लोग सचमुच ही ऐसा मान कर गीता को वही बाहरवें अध्याय तक पढ़ने का अभ्यास न डाल लें इसलिए महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय 43 में, जो गीता के 18 अध्यायों के एकदम बाद आता है, छह पंक्तियों में गीता के परिणाम का रिकार्ड लिख दिया गया है। यानी इस गीता में केशव ने 620 श्लोक बोले, अर्जुन ने 57, संजय ने 67 और

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं, केवल चर्चा जा रही है!

खानपुर विधायक उमेश कुमार ने कहा कि प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को खोखला कर रहे भ्रष्टाचार के कारण 25 साल बाद भी उत्तराखण्ड अपने पैरों पर खड़ा नहीं पाया है। नेता अपनी नाकामी छिपाने के लिए पहाड़ और मैदान के बीच खाई पैदा कर रहे हैं। विधायक ने जल्द ही अपनी पार्टी की घोषणा कर मैदान के लोगों की आवाज बुलन्द करने का एलान किया। वह यह भी कहते हैं कि उत्तराखण्ड गठन से प्रदेश की जनता में जबरदस्त उत्साह था। जनता ने सोचा था कि उनका अपना राज्य होगा, जहां अच्छी स्वास्थ्य सेवा और रोजगार मिलेगा लेकिन आज कुशासन के कारण गरीब और गरीब हो गया है, जबकि अमीर और अमीर हो गया है। सरकारी नौकरी तो दूर प्राइवेट नौकरी पाने में भी कठिनाई हो रही है। एक करोड़ का निवेश करने का दावा करने वाली सरकार ने केवल 36 करोड़ खर्च कर सवा लाख करोड़ के एमओयू का दावा किया है। सात वर्ष बाद भी उद्योग नहीं मिल रहे हैं।

खानपुर विधायक की बातों से स्पष्ट हो रहा है कि उत्तराखण्ड किस प्रकार की राजनीति चल रही है। लेकिन यह बड़ी सच्चाई कि विधायक ने जैसा कि कहा कि पहाड़ की बात करने वाले जनप्रतिनिधि मैदान में ही रहना चाहते हैं। विधायक उमेश के अलावा अन्य विधायक भी सदन में इस प्रकार की बातें कर चुके हैं। असल बात यह है कि इस पर्वतीय प्रदेश में आम जनता जिस तरह से पिस रही है और नेताओं की हरकत को समझ चुकी है, ऐसे में विधायक-मंत्री भी आने वाले दिनों की राजनीति के लिये खुलकर बोलने लगे हैं।

उत्तराखण्ड का राजनीतिक भविष्य कैसा होगा यह अभी कहना जल्दबाजी होगा लेकिन आम जनता की पीड़ा वह किससे कहे? कहने को शासन व प्रशासन के द्वार और जनताद्वार का रास्ता बना है। लेकिन जिस प्रकार से अपसंस्कृति परोसने वाले हाबी होते जा रहे हैं और मजबूर लोगों को यही सब विकास बताया जा रहा है। इसके अलावा पहाड़-मैदान के नाम पर भटकाव की खेल होने लगा है जबकि उत्तराखण्ड की सच्चाई सब जानते हैं। इसलिये जरूरी है भ्रष्टाचार पर लगाम लगाई जाए। अभी तक तो नेताओं द्वारा भ्रष्टाचार पर लगाम के बजाए केवल चर्चा भर की जा रही है। इसकी शुरुआत सभी मंत्री-विधायकों-सांसदों से होनी चाहिए।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

अन्तरिक्ष यान निर्माण तीगुना करेगा इसरो

कोलकात्ता। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष वी. नारायणन ने कहा है कि इसरो ने इस वित्त वर्ष में सात और प्रक्षेपणों की योजना बनाई और भारत का पहला मानव अन्तरिक्ष यान पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 2027 में ही भेजा जाएगा। कहा कि इसरो मिशन के बढ़ती मांग के साथ तालमेल बनाए रखने के लिये यान निर्माण तीगुना करने पर काम कर रहा है।

नेपाल में 5 मार्च को होगा चुनाव

काठमाण्डू। नेपाल के निर्वाचन आयोजन आयोग ने 5 मार्च में होने वाले संसदीय चुनाव का कार्यक्रम जारी करते हुए बताया है कि उम्मीदवारों को प्रतिनिधि सभा के चुनाव के लिए 20 जनवरी को सुबह 10 बजे से सायं 6 बजे तक नामांकन दाखिल करना होगा। उम्मीदवारों की सूची उसी दिन सायं 5 बजे बे बाद प्रकाशित की जाएगी। 21 जनवरी को आपत्ति दर्ज करने का समय है।

हसीना को मौत की सजा के बाद.....

ढाका। बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को पिछले वर्ष जुलाई में उनकी सरकार के खिलाफ व्यापाक विरोध प्रदर्शनों के दौरान किए गए मानवता के विरुद्ध अपराधों के लिए विशेष अदालत ने मौत की सजा सुनाई। हसीना ने इस पर कहा है- न्यायाधिकरण पूर्वाग्रह से ग्रसित एवं राजनीति से प्रेरित है।

एयरइंडिया चीन के लिए फरवरी से उड़ान

नई दिल्ली। टाटा समूह की विमान सेवा कम्पनी एयर इंडिया अगले साल एक फरवरी से दिल्ली और चीन के शंघाई बीच उड़ान शुरू करेगी। एयरलाइन 2020 की शुरुआत में कोविड-19 महामारी के मद्देनजर शंघाई के लिए सेवाएं बन्द कर दी गई थीं। उस समय एयरलाइन का स्वामित्व भारत सरकार के पास था।

अमेरिका में कुशल प्रवासियों का स्वागत

न्यूयॉर्क। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका-सऊदी अरब निवेश मंच को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह ऐसे कुशल प्रवासियों का देश में स्वागत करेंगे जो अमेरिकी श्रमिकों को चिप और मिसाइल जैसे जटिल उत्पाद बनाने की तकनीक सिखाएंगे।

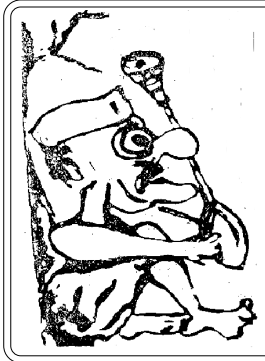

फसक

दाज्यू, तरावट के लिए नए करतब कर रहे ठैरे

चट्टम-चाट करते हुए मौज ले रहे हैं बल

दाज्यू, कजलुग में जो न हो वही कम है। अब देखो, तरावट के लिए नए करतब कर रहे ठैरे। कोई उछल रहा है तो कोई उछाल रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने बागेश्वर जिले में खड़िया खनन पर हाईकोर्ट की लगाई अन्तरिम रोक को हटाते हुए 29 वैध खनन पट्टाधारकों को तुरन्त खनन शुरू करने की अनुमति दी, तब से हमारा बब्बू खुश है और अनुलोम-विलोम करने लगा है। कह रहा था- 'सारे कागज ओके हैं, हिसाब-किताब फिट है। टैंसन लेने का नहीं देने का।' दाज्यू, बब्बू की सुनकर हमने दूर तक देखा तो पता चला कि गौरी और भिमिया भी पट्टा राहत से खुश हैं।

दाज्यू, अपना जमनिया भी तरावट में है। पार्टी का झोला-चिमटा लेकर घर-घर सराई कर रहा है बल। जमाना बहुत जहरीला होता जा रहा है। चट्टम-चट्टा करते हुए मौज ले रहे हैं बल। जमनिया भी उनमें से एक जीव है। दाज्यू, 2023 में एक सप्ताह के लिये स्वास्थ्य विभाग के अफसर ताइवान गये थे जिनका खर्च 28 लाख रुपये हुआ बल। दाज्यू, इतनी तरावट के बाद भी घूम आए दल की रिपोर्ट प्रस्तुत न करने पर अब सवाल उठ रहे हैं। आप जानने ही वाले ठैरे कि घुमाई फिराई का मजा मौके मिलने पर होता है। किसकी रिपोर्ट कैसी रिपोर्ट? दुनिया के घेरे में चक्कर लगाते रहो.....

दाज्यू, सरकार ने आवश्यक सेवाओं से जुड़े विभागों के कार्मिकों की हड़ताल पर 6 माह के लिए रोक लगा दी है। उपनल कर्मी मक्खू कह रहा है- 'अब योग करूंगा।' दाज्यू, ताल और हड़ताल हर युग में होने वाली ठैरी। हल्द्वानी में पिछले दिनों कमिश्नर सैप ने फर्जी प्रमाण पत्र का मामला पकड़ा था। चल रही जाँच में पता चला है कि वनभूलपुरा में फर्जी स्थाई निवासी प्रमाण पत्र बनाने का मुख्य आरोपली फैजान मिकरानी ने अपने को अरायजनवीस बता डेढ़ दशक के भीतर बाहरी राज्यों के कई लोगों को हल्द्वानी में बसाया। मनचाहे दाम लेकर लोगों के प्रमाण पत्र बना दिये जाते थे बल। गजब की तरावट में रहा मिकरानी। अब खोच-खोच के तार ढीले किये जा रहे हैं बल। दाज्यू, फिरोजाबाद के व्यापारी से धोखाधड़ी भी इसी बीच हुई है। यूपी के फिरोजाबाद में रहने वाले कारोबारी की सिल्वर डस्ट की लाखों की डील थी लेकिन उसे बालू भेज दिया गया बल। शिकायती पत्र के बाद अब रुद्रपुर पुलिस छानबीन कर रही है। हल्द्वानी में अलग ही लफन्दर चल रहा है। आए दिन बबाला मच जाने वाला ठैरा। हिन्दूवादी नेता विपिन पाण्डे को पुलिस ने पकड़ लिया। आरोप है लोगों को भड़काऊ बातें कर घपलत कर रहे थे। पिछले कई दिनों से अन्य मामलों में भी इस नेता की खटपट हो रही है। पार्टी वालों ने बाहर कर रखा है इन दिनों में। दाज्यू, नैनीताल नगर पालिका में भी रिमझिम मची हुई है। लेखाविभाग के वार्षिक आडिट के समय अध्यक्ष व सभासदों का टकराव हो गया। सभासदों ने पालिकाध्यक्ष के व्यवहार से नाराजी जताई। दाज्यू, रुड़की में गजब नंग्योई देखने को मिली। शताब्दी द्वार एक लॉज के बाहर विवाद में उलझी अर्द्धनग्न युवती ने सड़क में हंगामा किया। लोगबाग कह रहे हैं- इलाके में आपत्तिजनक कार्य होते हैं। ऐसी तरावट से भगवान बचाए। -तुम्हारा भुली झकरुवा

जानें धुर्मा देवता....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गरुड़ में व्यवसाय के अलावा पांगती जी 1991 से एलआईसी कार्य से जुड़े हैं। वह एलआईसी के चैयरमैन क्लब तक जुड़कर कई यात्राएं कर चुके हैं। यादों की खट्टी मीठी तरंगों में वह कहते हैं राज्य बनने से पहले और इसके बाद की स्थितियों में बहुत बदलावा आ चुका है। लोगों व्यापार और व्यवहार तरीका बदल गया है। लेकिन लीक पर चलने वाले हमेशा सदाबहार रहेंगे। गरुड़ में रहते हुए अपने मुलुक का स्मरण करने वाले जसवन्त सिंह जी रसियाबगड़ और दरकोट की यादों के साथ बुजुर्गों की बताई पुरानी बातों और आँखों देखी बताते हुए रोचक जानकारी देते हैं कि जोहार में धुर्मा देवता की जोहार में बड़ी कृपा है। इन्हें नन्दादेवी के पास ही स्थान दिया गया है। इनके बारे में बताते हैं कि नीती-माणा से धरमसिंह (धुर्मा देव) तिब्बत जा रहे थे, इन्हें बदमाशों ने घेर कर मार दिया। मिलम में गोरी नदी है और तिब्बत से गैंखा नदी आती है, बदमाशों ने धरम सिंह के शरीर को बकरी की खाल में पैक कर नदी में बहा दिया। भूतात्मा ने देव रूप लिया और तिब्बत में कोहराम मचा डाला। तिब्बत का एक बड़ा और सम्पन्न गाँव प्रेतात्मा के रोष से उजड़ गया। हो रही उथल-पुथल से लामा लोग भयभीत हो गये और नदी में ढूंढखोज के बाद बकरी की खाल में पैक धमरसिंह के शरीर को खोल कर बहा दिया। इसके बाद धरमसिंह की आत्मा ने 'अच्छा जा रहा हूं' कहते हुए जोहार का रुख किया और तय किया कि जो पहला गाँव पड़ेगा वहीं बैठूंगा। इस प्रकार धमरसिंह धुर्मा देव के रूप में मिलम में हैं।

पांगती जी बताते हैं कि धुर्मा देव के पुजारी नित्वाल हैं। इन्हीं के शरीर में देव प्रकट होते हैं। बचपन में उन्होंने देखा है कि लम्बा बांस जिस चार बलशाली लोग पकड़ रहते थे, जिसके ऊपर देव अवतरण होता वह उस बांस में चढ़ जाता और बकरी के बच्चे का खून पी लेता था। देव अवतरण का यह दृश्य साक्षात देवलोक से जोड़ने वाला होता है। धुर्मा देव में ताकत है कि वह वर्षा तक रोक सकते हैं। अपने कष्ट निवारण के लिये श्रद्धालु उनका स्मरण करते हैं।

ग्रामसभा पय्याँ के तीन युवाओं का अग्निवीर में चयन से खुशी का माहौल

लगन, परिश्रम और समर्पण का भाव : हरीश फर्स्वाण

गरुड़/बागेश्वर। ग्रामसभा पय्याँ के तीन युवाओं का अग्निवीर में चयन से खुशी का माहौल है। होनहार युवाओं की सफलता अन्य के लिये भी प्रेरणादायक है। समाज सेवी हरीश सिंह फर्स्वाण ने चयनित रोहित सिंह फर्स्वाण, अमित सिंह परिहार और मनोज परिहार को बधाई देते हुए कहा कि भारतीय सेवा के अग्निवीर पद पर चयनित होकर यह साबित कर दिया कि लगन, परिश्रम और समर्पण से कुछ भी असम्भव नहीं है। कहा इन तीनों ने जो अथक परिश्रम किया, गर्मी-सर्दी में पसीना बहाया और अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखा, यह सफलता उसी का परिणाम है। श्री फर्स्वाण ने कहा कि इन युवाओं सफलता पूरे क्षेत्र की सफलता ह। क्योंकि जिन परिस्थितियों से हमारे दूरस्थ क्षेत्र हैं वहाँ अन्न उगाने के अलावा बहादुर सिपाही बनने का उत्साह भी है।

सरकार की मंशा पर विधायक के सवाल

लोहाघाट। विधायक खुशाल अधिकारी ने सरकार की मंशा पर सवाल उठाते हुए कहा है कि जंगली जानवरों से लोगों की सुरक्षा के ठोस उपाय नहीं हो रे हैं। विधायक ने पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि सरकार की मंशा पलायन रोकने की नहीं है। सरकार गम्भीर होती तो ग्रामीणों की जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए पुख्ता इन्तजाम करताती। उन्होंने लोहाघाट, बाराकोट, पाटी में इन दिनों तेंदुए की दशशत का उल्लेख करते कहा क्षेत्रवासी दहशत में हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

राजरम्भा व पंचाचूली हिमपर्वत श्रृंखला के बीच नागनीधूरा नागवंशी व नाथपंथियों का आश्रालय

जगदीश सिंह बृजवाल

पौराणिक विश्वास- यदुवंशी कृष्ण को कंस तंत्र से जुड़ने से पूर्व शुरशेन प्रदेश के नागों से लोहा लेना पड़ा था। विरान कुरू-पांचाल में तक्षक के आधिपात्य को समाप्त करने वाले परिक्षित पुत्र जन्मनजेय के कारण फिर से नागजाति को हिमालय के उत्तर -पश्चिम में सिमटना पड़ा था। 7वीं शदी कश्मीर में नाग कर्काटस वंश राज्य करता था दक्षिण में भी नागों की उपस्थिति प्रमाणित हैं।

हिमालय के मध्य हेमवत क्षेत्र में यद्यपि किसी नाग शासक का पता न लगा हो किन्तु हिमाचल, नेपाल तक बहुत से गढ़ नाग जातियों द्वारा स्थापित है गढ़वाल अलकनंदा घाटी में नागपुर, उरगम पट्टियां, कुछ जाति तो अपने को नागवंशी ठाकुर कहते हैं।

स्कन्द पुराण, मानसखण्ड के अनुसार पाताल भुवनेश्वर, गंगोलीहाट, पिथौरागढ़ में नागों का निवास था। नाकुरी (नागुरी) पुंगराव घाटी में बेणीनाग, फंणीनाग, कालीनाग, धौलीनाग नागों के प्रतीकात्मक चिह्न हैं।

नाग सर्पपूजक आदम निवास छोटे कद काठी के चपटी नासिका वाले जो चेपांग, कुसण्ड, थाडू-बोक्सा, आसाम के बोडो मूल के निवासी शारीरिक लक्षणों से आज भी नागजाति का प्रतिनिधित्व करते हैं। नागों कि विशेषता कभी सर्प तो कभी मानव रूप में दिखाई देना है।

तिब्बत में भी कतिपय कबीले अपने को नागवंशी और अपनी भाषा को नाग भाषा कहते हैं। गुंगे प्रदेश के शासक खार-ल्दे का पुत्र को नागराज कहा जाता था।

प्राचीन नाग-निषाद, पुलिन्द, कोल, भिल्ल का संकरज ही नागजाति का अभ्युदय माना जाता हैं. जो आग्नेय भाषा से सम्बन्ध रखते हैं। बारह पुराण के अनुसार महर्षि कश्यप की पत्नी कुद्र से बासुकी, कम्बोज, कर्काटज, पद्म, महाशंख, शंख, कुलिक नागपुत्र उत्पन्न हुए थे। भारतभूमि में नाग जाति का महत्वपूर्ण देन है। नागपंचमी हिन्दू धर्म पर्व नाग जाति का स्मृति चिन्ह है।

जोहार घाटी क्षेत्र में में भी यत्र-तत्र नागवंशी जाति का प्रभाव देखने को मिलती हैं। यहाँ के अधिकांश लोग की आस्था इष्टदेव नागनी-जोगनी घटेली, जागरण, देव अवतरण पर असीम आस्था रखते हैं। नाग मन्दिरों में पूजा-अर्चना तथा नागपंचमी का विशेष महत्व है।

मुनस्यारी तहसील मुख्यालय के पास मेसर कुण्ड, मेसर देवता की कहानी, बरपटिया बर्निया जाति की रूपवती कन्या का हरण व मेसर देव का प्रेम-प्रसंग जाति बेमेल होना था। किरान्ती व नाग जाति अलग-अलग जाति से थे। असफल एक मार्मिक प्रेम गाथा का रहस्यमय कहानी आज भी लोगों के मुंह से सुनी जा सकती है। मेसर देवता का मानव रूप नाग जाति का रहा होगा, प्रेतात्मा का देवतात्मा होने से ही नागपंचमी के दिन ही मेसर देव की पूजा की जाती है। यह ठोस प्रामाणिक आधार प्रतीत होता है। जोहार के बूफू निवासी जंगपांगी चरखिमया राठ का सम्बन्ध नागों से होना बताते हैं।

इसी तरह बुई-पातो, लैंग, ढिमढिमिया क्षेत्र में नागवंशी व नाथपंथियों का प्रभाव रहा है।

नागनी धूरा (नागपर्वत) गोरी गंगा पार उत्तर में राजरम्भा तथा पंचाचूली के बीच हिम श्रृंखला को कहा जाता है, पंचचूली हिमालय पट्टी का हिस्सा है।

नागनी धूरा के ढलान में जोहार के प्रभावशाली पंज्वारी रलम्वाल जाति का निवास है 12 बिसी रलम्वाल जन-धन- बल से प्रभावशाली, प्रभावित करते रहे। ल्वांल-रलम्वाल ही सुनपति सौका के बंशज कहलाते हैं।

पूर्व में तिब्बत जाने का एकमात्र मार्ग कालबिलान, रालम से ही था। कालान्तर में ऊंटा धूरा दर्रा खुलने के बाद रलम्वालों का अवसान, तिजारत भी समाप्त हो गया था।

नागनी धूरा के क्षेत्र बुई में आज भी नागदेवता की पूजा सामुहिक रूप से की जाती है। पूजा में अजा बलि प्रथा है, कहीं भी महिष बलि नहीं दी जाती है कहा जाता है इस क्षेत्र में महिष पालना लोगों के लिए भी उपयुक्त नहीं रहता है। बुई के ठेलाखेत भूमि विवाद में रलम्वालों के आपसी संघर्ष में जन हानी देखते आज भी कहा जाता है की नागवंशी धूरा के सर्प (नाग) द्वारा ही भूमि बंटवारे के बाद रलम्वालों का आपसी खूनी संघर्ष समाप्त हुआ था। सर्प नागनी धूरा से ही प्रकट हुआ था बुई-पातों, लैंग, ढिमढिमिया में नागवंशी व नाथपंथियों का आश्रालय सम्भवतः हो।

एकबार गुरू गोरखनाथ जी जब बद्रीनाथ यात्रा पर आए तो उन्होंने श्रीनगर गढ़वाल में मठ स्थापित कर महन्त की सुनिश्चित व्यवस्था भी किया। जिसमें जिसमें सात महन्त हुए, जिसमें एक महन्त नीती-माणा घाटी के भोटिया जाति का भी रहा था। नीती-माणा घाटी में गुरुभाई, गुरु बहन पर्व प्रथा, परम्परा प्रचलित किया, वे ही जोहार घाटी मार्ग से नाथपंथी भिक्षाटन करते ढिमढिमिया में भी निवास करने लगे, नाथपंथी बच्चों की प्रेतात्माएं ही, देवतात्मा के रूप में आज भी बिलज्वाल कौम का इष्टदेव है। जो जीवन रक्षक देव माना जाता है। हरदेवल का प्रभाव से ही पुर्ब्याल देवता का अभ्युदय हुआ है।

नागनी धूरा नागपर्वत नाग जाति का आज भी प्रतीकात्मक स्मृति है। पौराणिक इतिहास में नागवंशी जाति का महत्वपूर्ण देन है। टिप्पणी लेखक के ज्ञान सृजन में सहायक होगा।

राम स्तुति

(1)
राम नाम मिश्री पीवें, दूरी जाहीं सब रोग।
सुन्दर औणध कटुक सब, जब तप साधन जोग,
राम नाम पियूष ताजी बिण पीवें प्रतिदिन,
सुन्दर डोले मटकते जनजन आगे दीप
राम नाम का भोजन करें राम नाम जलपान
राम नाम सस्ते मिली रहे
सुन्दर राम रसायन पीवें
राम राम सोवत कहें, जगे हरी हरी होई,
सुन्दर भजिये ब्रह्म सुख ब्रह्म सिखा सोई
सुन्दर भजिये राम को ताजिये माया मोह।
पारस के परसे बिना, दिन सिन हिले लोहा
राम भजन राम ही मिलै, तामैं फेर न सार।
सुन्दर भजै सनेह सौं, वाकौं मिलन न बार।।
सद्गुरु दादू आम भजि सदा लहे लयलीन
सुन्दर यानी समझावे, राम भजन हित कीन।।
(1)
राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे।
नाहिं तौ भव बेगारि महँ परिहै, छूटत अति कठिनाई रे।।
बाँस पुरान साज सब अठकठ, सरल तिकोन खटोला रे।
हमहिं करि कुटिल पाखण्ड मंद बिनु डोरा रे।।
बिषम कहार मार मद माते, चलहिं न पाउँ बटोरा रे।
मंद बिलंद अँधेरा पलपल, पादप भूल मुलेरा रे।।
काँट कुराय लपेटन लोटन, ठावहिं ठाउँ बझाऊ रे।
जस जस चलिये दूरि तस तस, निज बास न भेंट लगाऊ रे।।
मारग अगम, संग नहिं संबल, नाउँ गाउँकर भूला रे।
तुलसिदास मल वारु हमारे आस मनोरथ रै।

-नन्दा बल्लभ पाण्डे
ज्योलीकोट, नैनीताल

सिद्धार्थ टोलिया मैमोरियल टूर्नामेंट

मुनस्यारी। सिद्धार्थ टोलिया मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट के अण्डर-14 बालक वर्ग में मुनस्यारी पब्लिक स्कूल विजेता और आश्रम पद्धति स्कूल रांथी उपविजेता रहे। बालिका वर्ग में जीआईसी विजेता और मारथोमा मिशन ज्योति स्कूल उप विजेता बने। फाइनल मैच के मुख्य अतिथि मर्चेन्ट नेवी के वरिष्ठ अधिकारी हरीश सिंह पांगती और विशिष्ट अतिथि सरस्वती शिशु मन्दिर के प्रधानाचार्य रणजीत सिंह बसेड़ा ने खिलाड़ियों को बधाई दी। प्रतियोगिता के प्रायोजक जसवन्त सिंह टोलिया, श्रीमती अनीता टोलिया, सुश्री नम्रता ने जोहार क्लब मुनस्यारी की मुहीम की सराहना करते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

ज्योतिष की बातें- 257

5 दिसम्बर 2025 को गुरु वक्री गति से चलते हुए वापस शत्रुराशि मिथुन में प्रवेश करेगा। अतः गुरु निर्बल रहेगा। अभी गुरु के शुभ फलों की अधिक आशा नहीं की जा सकती। फिर भी अगले 179 दिन गुरु अपने कारक विषयों धन समृद्धि, शालीनता, विवाह, पुत्रलाभ, उच्चशिक्षा, धर्म परायणता, अध्यात्म, संस्कृति आदि में वृषभ, कुम्भ, धनु, तुला व सिंह राशि के जातकों को अल्पमात्रा में शुभफल प्रदान करेगा।

6 दिसम्बर 2025 को बुध समराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा। अभी बुध सामान्य बली रहेगा। बुध बुद्धि, व्यवसाय, वाणिज्य, लेखन, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में अगले 23 दिन तुला, सिंह, मिथुन, मेष, कुम्भ व मकर राशि के जातकों को शुभफल प्रदान करेगा।

7 दिसम्बर 2025 को मंगल मित्रराशि धनु में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शनि की अशुभ दृष्टि होगी तो गुरु की शुभ दृष्टि भी होगी। अतः कुल मिलाकर मंगल बली रहेगा। अगले 40 दिन मंगल खेलकूद, साहस, पराक्रम, मकान आदि अपने कारक विषयों में तुला, सिंह, कर्क व कुम्भ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा।

गीता जयन्ती- मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष एकादशी अर्थात् मोक्षदा एकादशी को ही गीता जयन्ती मनाई जाती है। तदनुसार सोमवार 1 दिसम्बर 2025 को गीता जयन्ती पर गीता परायण अवश्य करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 147

वैदिक ज्योतिष का तात्पर्य

वैदिक ज्योतिष की जानकारी जिस ज्योतिषी को नहीं होती है वह ज्योतिष की अपनी विधा को ही वैदिक ज्योतिष समझता है। जैसे कि जिस व्यक्ति को वैदिक ज्योतिष की जानकारी नहीं है, केपी ज्योतिष का अभ्यास करता है, तो वह केपी ज्योतिष को ही वैदिक ज्योतिष समझता है। इसी प्रकार नाड़ी ज्योतिष वाला नाड़ी ज्योतिष को, जेमिनी ज्योतिष वाला जेमिनी ज्योतिष को, लालकिताब वाला लालकिताब ज्योतिष को ही वैदिक ज्योतिष समझते हैं। जबकि यह बात सर्वथा गलत है। वैदिक ज्योतिष की परिभाषा के अनुसार अग्नि पुराणए वृहज्जातक, पाराशरी, सारावली, जातक पारिजात, फलदीपिका आदि के क्रम के ग्रन्थों को ही वैदिक ज्योतिष कहा जाता है।

अन्य विधियाँ भी फलित की हो सकती हैं, वे सटीक भी हो सकती हैं लेकिन वे वैदिक ज्योतिष नहीं है। जैसे- केपी ज्योतिष, लाल किताब, टैरो कार्ड, अंक ज्योतिष, हनुमान ज्योतिष, रमल ज्योतिष आदि आदि। फलित की ये विधियां वैदिक ज्योतिष के अन्तर्गत नहीं हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब वे लोग भी अपने को वैदिक ज्योतिषी कहते हैं जिन्होंने वैदिक ज्योतिष की एक भी किताब नहीं पढ़ी, देखी तक नहीं।

कुछ विद्वानों का कहना है कि अन्य सभी नाड़ी ज्योतिष, लाल किताब आदि वैदिक ज्योतिष से निकली हैं अतः सभी को वैदिक ज्योतिष ही कहना चाहिए यह बात उचित नहीं है। भाषा विज्ञान के अनुसार विश्व की समस्त भाषाएं संस्कृत से ही प्रादुर्भूत हैं इस आधार पर अंग्रेजी, उर्दू या तमिल मलयालम आदि भाषाओं को भी संस्कृत नहीं कह सकते। अंग्रेजी भी संस्कृत ही है, यह सोचकर अंग्रेजी का ही अभ्यास करें, संस्कृत को छोड़ दें यह उचित है क्या? ऐसा करने से अन्त में संस्कृत भी नष्ट हो जाएगी।

इस समय वास्तव में वैदिक ज्योतिष शास्त्र नष्ट होने के कगार पर है केवल संस्कृत महाविद्यालयों में ही अब थोड़ा बहुत बचा हुआ है। अन्य सभी जगह केपी, नाड़ी, लाल किताब आदि का प्रचलन होने से तथा सोशल मीडिया के कारण भी लोगों ने वैदिक ज्योतिष को पढ़ना सर्वथा बन्द कर दिया है। इस बात पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। जिन विद्वानों को संस्कृत भाषाए भारतीय संस्कृति, वैदिक ज्योतिष पर श्रद्धा है उन्हें अवश्य ध्यान देना चाहिए।

हरि शरणम् !

-ओंकार नाथ कोष्टा

उधमसिंहनगर में खाद्य सुरक्षा योजना में गड़बड़ी, राशन कार्ड निरस्त होंगे

रुद्रपुर। उधमसिंह नगर में राशर घोटाले का मामला प्रकाश में आया है, ऐसे में अब राशनकार्ड निरस्त करने की तैयारी है। बताया जाता है कि सस्ता गल्ला वितरण में अब तब का यह सबसे बड़ा घोटाला है। जिले में 2450 अपात्र परिवार सालों से गरीबों का राशन ले रहे थे।

अन्त्योदय परिवार श्रेणी में 2245 अपात्र लोगों ने फर्जी तरीके से अपना कार्ड चलाकर सरकारी राशन लिया। घपले की जानकारी मिलते ही खाद्य आपूर्ति विभाग ने जाँच शुरू कर दी है। शुरुआती सत्यापन में अन्त्योदय के 205 और बीपीएल के 2245 कार्डधारक अपात्र पाए गए हैं। ये परिवार वर्षों से गरीबों के हिस्से का राशन ले रहे थे। अब इनके कार्ड निरस्त करने की कार्रवाई की जा रही है। बताया गया है कि सत्यापन में सबसे अधिक किच्छा में 621 अपात्र परिवार पाए गए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बिन्दुखत्ता राजस्व गांव संघर्ष तेज

हल्द्वानी। बिन्दुखत्ता राजस्व ग्राम प्रकरण पर भाकपा माले ने भाजपा सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए संघर्ष तेज करने का ऐलान किया है। कारोड में सम्पन्न भाकपा माले की बैठक में वक्ताओं ने कहा कि बिन्दुखत्ता राजस्व गांव की पत्रावली का आपत्ति के साथ वापस आना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि विधायक व धामी सरकार ने यहाँ की भोली भाली जनता को बरगलाया है। माले के जिला सचिव डॉ.कैलाश पाण्डेय ने कहा कि विस से प्रस्ताव पास कर केन्द्र सरकार को भेजकर डिसफॉरेस्ट करने की प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए।

प्रकाश पन्त स्मृति द्वार का शुभारम्भ

पिथौरागढ़। नगर के विजडम तिराहे में स्व. प्रकाश पन्त स्मृति द्वार का शुभारम्भ हुआ। पूर्व विधायक चन्द्रा पन्त, भाजपा नेता भूपेश पन्त व मेयर कल्पना देवलाल ने रिबन काट द्वार का शुभारम्भ किया और स्व. प्रकाश पन्त के कार्यों का स्मरण किया।

लोहाघाट संघर्ष समिति मुखर

लोहाघाट। नगर की विभिन्न समस्या को लेकर लोहाघाट विकास संघर्ष समिति मुखर है। इस बारे में समिति ने नगर पालिका के ईओ से भेंट कर समस्याओं से अवगत कराया। समिति के अध्यक्ष विपिन गोरखा के नेतृत्व में लोगों ने कहा कि पार्किंग सुविधा का लाभ आम जनता को मिले। राहगीरों के लिये टीनसेड और शौचालय की व्यवस्था शीघ्र हो।

कालेज का नाम शहीद नन्दन चम्याल के नाम

चम्पावत। देवीधुरा डिग्री कालेज का नाम अब शहीद नन्दन सिंह चम्याल के नाम पर रखा जाएगा। इसके लिए उच्चशिक्षा अनुभाग ने संशोधित शासनादेश जारी किया है। अगस्त 2022 में अमरनाथ यात्रा में सुरक्षा ड्यूटी के दौरान बस हादसे में आईटीबीपी के एसआई नन्दन सिंह शहीद हो गए थे।

तीनपानी से नरीमन तक होगा सड़क सुधार

हल्द्वानी। सड़क सुधारीकरण को लेकर नगर निगम, राजस्व, सिंचाई, यूपीसीएल, जल संस्थान, लोनिवि और यूयूएसडीए की टीमों ने संयुक्त निरीक्षण किया। तीनपानी से नरीमन तक सड़क सुधारीकरण को सड़क किनारे हुए अतिक्रमण को हटाने का निर्णय लिया गया। बिजली की लाइन, जल संस्थान की पेयजल लाइन और अन्य यूटिलिटी के शिफ्टिंग का निर्णय भी लिया गया। नगर आयुक्त परितोश वर्मा ने बताया कि सड़क सुधारीकरण के लिए शीघ्र ही अतिक्रमण हटाया जाएगा और यूटिलिटी शिफ्टिंग का काम भी शुरू किया जाएगा। इस दौरान वार्ड 58 के पार्षद मनोज जोशी ने सुझाव दिया कि बरसाती नाले के लिए नाला निकाला जाए।

कड़ाके की ठण्ड : उच्चहिमालय में पानी जम गया, पाले से फिसलन भी

मौसम की ठण्ड ने असर दिखाना शुरू कर दिया है। कड़ाके की ठण्ड में उच्च हिमालय में पानी जम गयया है और पहाड़ की घुमावदार सड़कों पर पाले से फिसलन हो रही है। केदारनाथ, बदरीनाथ में बहता पानी जमने के अलावा जोहार, दारमा, व्यास, चौंदास में ठण्ठ की मार दिखाई दिखाई रही है। माइग्रेशन में घाटियों पर आने वाले परिवार जानवरों सहित आ चुके हैं। हिमनगरी मुनस्यारी, बेरीनाग, चकोड़ी, कौसानी, रानीखेत ठण्ड से प्रभावित है लेकिन पहाड़ों में दिन में खिलने वाली धूप से मौसम सुहाना हो रहा है।

धारचूला, मदकोट, जौलजीवी, बगड़ीहाट, अस्कोट, डीडीहाट में सड़कों का पाला जमकर दिखाई दे रहा है। इसी प्रकार घाट पनार गंगोलीहाट मार्ग, ताकुला बागेश्वर मार्ग, ग्वालदम थराली, रानीखेत कर्णप्रयाग हाईवे में पाले वाली जगहों पर जबर्दस्त शीत है। अभी आने वाले दिनों में ठण्ड तीव्र होने के साथ ही भाबर और मैदान में इसका असर होगा। अनुमान है इस बार ठण्ड ज्यादा होना है।

जौलजीवी मेले में छाये नेपाली कलाकार

जौलजीवी। भारत-नेपाल की साझा संस्कृति का प्रतीक जौलजीवी मेला व्यापारिक जोर में है, वहीं मंचीय प्रस्तुतियों ने भी लोगों का मन मोहा। स्कूली बच्चों की प्रतियोगिता के अलावा स्थानीय कलाकार व आमंत्रित कलाकारों में नेपाली कलाकारों ने मोहक प्रस्तुतियों से मन मोह लिया।

दर्जामंत्री अशोक नवियाल, मेला अधिकारी जितेन्द्र वर्मा सहित तमाम लोगों की उपस्थिति देखी गई। व्यापार संघ प्रमुख धीरेन्द्र धर्मशक्तू सहित उनकी टीम व्यवस्था संचालन में लगातार सहयोगी रही है। रात्रि में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्टार नाइट के रूप में आमंत्रित कलाकारों के साथ ही जीआईसी धारचूला, रं कल्याण संस्था, मल्लिकार्जुन सरस्वती विद्या मन्दिर, विवेकानन्द इण्टर कालेज, ईशा मर्तोलिया, सुन्दर बाफिला, नवीन भट्ट, सतयम तेजवान ने प्रस्तुतियां दीं। संचालन करन सिंह थापा, शंकर दत्त भट्ट और ए.आर. दताल द्वारा किया जा रहा है।

व्यापारिक मेले की सरकारी अवधि के अलावा भी यह मेला अभी चलेगा। जिसमें सीमा के दोनों ओर से लोग जुट रहे हैं।

गुंजी में अवैध खनन से लोग भड़के

धारचूला। तहसील क्षेत्र के वाइब्रेंड विलेज गुंजी में अवैध खनन से ग्रामीण बेहद गुस्से में हैं। ग्रामीणों ने क्षेत्र के जंगल को नुकसान पहुँचाए जाने का आरोप लगाते हुए मनमानी बन्द नहीं करने पर उग्र आन्दोलन की चेतावनी दी है।

सरपंच लक्ष्मी गुंज्याल ने कहा है कि क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों के लिए सारथी कम्पनी को खनन की अनुमति दी गई है। कम्पनी ने अपना क्रशर प्लान्ट भी यहाँ लगा रखा है लेकिन कम्पनी खनन के लिए निर्धारित स्थल पर खनन करने के साथ ही निर्धारित क्षेत्र से बाहर अवैध खनन कर रही है। पंगछम नामक स्थान पर खनन जंगल तक पहुँच गया है। कई पेड़ खनन की चपेट में आ गए हैं। पूरे जंगल पर खतरा होने लगा है।

सरपंच ने कहा कि उच्च हिमालय में पर्यावरण को संरक्षित करने में इस जंगल की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कम्पनी के प्रतिनिधियों को पत्र सौंपकर कहा कि वे अपना एग्रीमेंट दिखाएं। अवैध खनन बन्द न होने पर उग्र आन्दोलन होगा।

बागेश्वर पालिकाध्यक्ष को अवमानना नोटिस

बागेश्वर। हाईकोर्ट की एकलपीठ ने पूर्व आदेश का अनुपालन न करने पर नगर पालिका अध्यक्ष सुरेश खेतवाल और प्रधान सहायक विजय सिंह को अवमानना नोटिस जारी कर अपना पक्ष रखने को कहा है। याचिकर्ता हयात सिंह परिहार ने याचिका में कहा कि उन्हें शासन ने 17 सितम्बर 2025 को नगर पालिका के प्रभारी अधिशासी अधिकारी पद पर नियुक्त किया था, जिसका प्रभार याची द्वारा 18 सितम्बर 2025 को ग्रहण कर लिया था लेकिन तीन सप्ताह तक नगर पालिका अध्यक्ष द्वारा याची को वित्तीय अधिकार नहीं दिए गए। इस बीच 9 अक्टूबर को याची के स्थान पर एक अन्य प्रभारी ईओ नियुक्ति कर दी गई और याची को हल्द्वानी नगर निगम स्थानान्तरित कर दिया गया। याची ने पूर्व में दाखिल याचिका में इसे चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने पाकिा के आदेश पर रोक लगा थी।

बताते चलें कि बागेश्वर पालिका में अध्यक्ष व ईओ हयात सिंह के बीच पहले से मनमुटाव काफी चर्चा में बना हुआ है।

उपनल कर्मियों का प्रदर्शन, कांग्रेस साथ

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा अगले 6 महीने तक हड़ताल पर रोक के बावजूद उपनल कर्मियों का चारों ओर प्रदर्शन जारी है। सरकार के खिलाफ उग्र हुए आन्दोलन कारियों को विपक्ष का साथ मिला है। इनके समर्थन में कांग्रेस खुलकर मोर्चा खोल चुकी है।

देहरादून से लेकर अन्य जिलों में उपनल कर्मियों की मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन के समाचार हैं। नाराज कार्यकर्ताओं ने सरकार का पुतला फूंकते हुए कहा कि सरकार को युवाओं की कोई चिन्ता नहीं है। कांग्रेस पार्टी के सभी छोटे-बड़े नेता इस मुद्दे को लेकर सरकार पर सवाल दाग रहे हैं। यूकेडी ने उपनल कर्मियों के समर्थन में हड़ताल की है और सरकार से राज्य हित में बड़े फैसले लेने को कहा है। भाकपा(माले) ने इस लड़ाई में उपनल कर्मियों का पक्ष लेते हुए डटे रहने को कहा है। उपपा सहित अन्य भी सत्ता को घेरने में साथ दे रहे हैं।

पटाल बाजार का होगा सौन्दर्यीकरण

अल्मोड़ा। ऐतिहासिक पटाल बाजार का सौन्दर्यीकरण कार्य जल्द शुरू होगा। इसके लिये प्रशासन की ओर से कार्यवाही होने लगी हे। पहले चरण में आर्मी गेट से थाना कोतवाली तक करीब दो सौ मीटर क्षेत्र का सौन्दर्यीकरण कार्य प्रस्तावित है।

जिलाधिकारी अंशुल सिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में बताया गया कि पटाल बाजार को चरणबद्ध तरीके से उसके प्राचीन स्वरूप में विकसित करने की प्रक्रिया शुरू होगी। सीएम घोषणा के तहत होने वाले इस कार्य के लिए डीएम ने सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिए कि सौन्दर्यीकरण कार्य के लिए स्पष्ट समयसीमा तय की जाए तथा पूरी परियोजना को विभिन्न चरणों में विभाजित कर क्रियान्वयन की रूपरेखा बनाई जाए। उन्होंने कहा कि पटाल बाजार जिले की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण केन्द्र है, इसलिए कार्यों की गुणवत्ता, समन्वय और विरासत संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए। बैठक में उप निदेशक पर्यटन सहित अधिकारी थे।

तीन माह के भीतर ढहाएं अवैध निर्माण

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तराखण्ड सरकार को निर्देश दिये हैं कि जिम कार्बेट टाइगर रिजर्व में पेड़ों की कटाई और अवैध निर्माण के चलते हुए नुकसान की भरपाई के लिए आवश्यक कदम उठाएं। मुख्य वन संरक्षक को सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त सेन्ट्रल इम्पावर्ड कमेटी के साथ परामर्श करने को कहा ताकि तीन माह के भीतर सभी अवैध निर्माणों को ध्वस्त किया जा सके।

बालेश्वर मन्दिर में जीर्णोद्धार कार्य

थल। ऐतिहासिक बालेश्वर मन्दिर के जीर्णोद्धार व सौन्दर्यीकरण का कार्य जारी है। पूजा अर्चना के बाद कार्यदायी संस्था ग्रामीण यान्त्रिकी सेवा विभाग के ठेकेदार ने बालेश्वर मन्दिर, पार्वती मन्दिर, हनुमान मन्दिर, भैरव मन्दिर, केदारशिला में पूजा कर भूमि पूजन किया। बताया मन्दिर के लिए 2 करोड़ 71 लाख की धनराशि स्वीकृति हुई है। इस दौरान आचार्य नीरज उपाध्याय, गिरीश दत्त भट्ट, गणेश दत्त भट्ट थे।

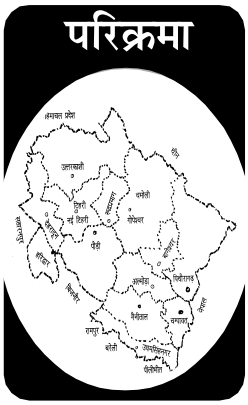

डीडीहाट पार्किंग निर्माण ठप से नाराज

डीडीहाट। तीन करोड़ से अधिक की लागत से बनने वाली पार्किंग का कार्य ठप होने से क्षेत्रवासी नाराज हैं। निर्माण कर रही संस्था पार्किंग कार्य को 2022 से अधूरे में छोड़ चुकी है। ओगला मार्ग पर हिनोला मोड़ के पास पर्यटन विभाग की ओर से 3.50 करोड़ की लागत से बन रही मल्टी स्टोरी पार्किंग से उम्मीद थी लेकिन अब कार्य रुकने से प्रशासन के लिये भी सरदर्द बना हुआ है। इस मामले में विधायक, व्यापार संघ, समाज सेवी आवाज उठाते रहे हैं।

जागेश्वर धाम में सुरक्षा एजेंसी अलर्ट

अल्मोड़ा। धार्मिक स्थलों की सुरक्षा को लेकर जारी अलर्ट के बाद जिले की सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारी जागेश्वर धाम पहुंचे। धाम की सुरक्षा का ऑडिट किया जिसमें पता चला कि सिर्फ मन्दिर और गेट पर ही सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। बाजार और मन्दिर के बाहर कैमरे नहीं थे। न ही वाहनों को ट्रेस करने की व्यवस्था। इसके बाद खामियां दूर करने के निर्देश जारी किए गए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गीता : भारत के.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

धृतराष्ट्र ने एक श्लोक बोला। इन छह पंक्तियों को मिला कर जो पाँच श्लोक इस अध्याय 43 के प्रारम्भ में गीता के महत्व और परिणाम के बारे में लिखे हैं वे महाभारत के कई संस्करणों मं नहीं मिलते।

बस एक रोचक बात और कहनी है। गीता के अठारह महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय 25 से 42 में सिमटे हैं। पर अगर आप भीष्मपर्व के अध्याय 24 के अन्तिम श्लोक को अध्याय 43 के उस पहले श्लोक (जो ऊपर बताए पाँचकहीं मिलने कहीं नमिलने वाले श्लोकों के बाद आता है) जोड़ कर पढ़ें तो कहीं तार टूटता नहीं और युद्ध का एक सिलसिलेवार वर्णन मिलता रहता है। हम इन श्लोकों को ही उनके हिन्दी अर्थ के साथ उद्धृत किए देते हैं जो (गीता प्रेस गोरखपुर के संस्करण वाली) महाभारत के भीष्मपर्व के अध्याय 24 का (अन्तिम) श्लोक संख्या 7 और अध्याय 43 का श्लोक संख्या 6 है।

भीष्मपर्व अध्याय 24 श्लोक 7

अन्योन्यं वीक्ष्यमाणानाम्
योधानां भरतर्षभ
कुंजराणां च नदताम्
सैनयानां च प्रहृष्यताम्

'भरतभूषण, एक दूसरे की ओर देखने वाले योद्धाओं, गर्जते हुए हाथियों और हर्ष से भरी सेनाओं का तुमुल नाद सर्वत्र व्याप्त हो रहा था।' भीष्मपर्व 43, श्लोक 6

ततो धनंजयं दृष्ट्वा
बाणगाण्डीवधारिणम्
पुनरेव महानादम्
व्यसृजन्त महारथाः

'राजन् तदनस्तर अर्जुन को गाण्डीव धनुष और बाण धारण किए देख, पाण्डव महारथियों, सोमकों और उनके अनुज भी सैनिकों ने बड़े जोर से सिंहराद किया।' ये दोनों श्लोक एक ही प्रसंग से जुड़े हुए और उसे आगे बढ़ाते हुए नजर आते हैं।

इस तरह दो निष्कर्ष स्पष्ट हैं। एक, महाभारत में गीता होनी चाहिए, इसका ध्यान व्यासदेव या उनके किसी निकट के उत्तराधिकारी को बाद में आया। दो, गीता की स्वाभाविक समाप्ति उसके बारहवें अध्याय में हो जाती है, पर कुछ प्रचलित वादी-विवादी विचारों को महत्वपूर्ण होने या बनाने की दृष्टि से उसके अन्तिम छह अध्यायों में रखा गया। वैसे भी महाभारत प्रबन्धकाव्य अकेले व्यास नहीं उनकी टीम द्वारा लिखी मानी जाती है जो क्रमशः व्यास, उनके पुत्र शुक और उनके शिष्य वैशम्पायन के हाथों वर्तमान काल में उपलब्ध होने वाले आकार तक पहुँचाया गया। इसलिए एक कल्पना और भी कर सकते हैं। मूल महाभारत व्यासदेव ने लिखी, जिसमें कौरव-पाण्डवों का युद्ध तो है, पर उसमें शायद गीता को स्थान नहीं मिला हो। यह कल्पना भीष्मपर्व के ऊपर लिखे दो श्लोकों के परिप्रेक्ष्य में कोई शेखचिल्ली की उड़ान भी नजर नहीं आती, बल्कि तर्कपूर्ण ही नजर आती है। व्यास के पुत्र शुकदेव ने अर्जुन के पौत्र परीक्षित को महाभारत सुनाई तो उन्होंने बारह अध्यायों में समाप्त हो जाने वाला कृष्णार्जुन सम्वाद भी उसमें डाल दिया होगा। पर जब तीसरी अवस्था में शुकदेव के शिष्य वैशम्पायन ने परीक्षित के पुत्र जनमेजय को गीता सुनाई तो उसमें बाकी के अध्याय जोड़ दिए होंगे। जब सौति जनमेजय को महाभारत सुनाने के लिए निकल पड़े तो उनके सामने पूरी लक्षश्लोकी महाभारत थी। यानी बहस चलती रहेगी कि गीता गीता व्यास ने लिखी या उनके किसी एक या दोनों उत्तराधिकारियों ने या किसी तीसरे महापण्डित ने जिसका नाम दुनिया कभी जान ही नहीं पाई।

पर इससे क्या कुछ अन्तर पड़ने वाला है? व्यास ने लिखी या उनकी सुतशिष्य परम्परा ने, सबने मिल कर लिखी या किसी अन्य महापण्डित ने, इसमें गीता उस शिखर से नीचे नहीं गिरती जहाँ उसे उसके पाँच हजार वर्षों के जीवनकाल ने बिठा दिया है। पाँच हजार वर्षों की काल परिधि में बाँध कर भी शायद हम गीता की कालबाह्य महत्ता में रुकावट पैदा कर रहे हैं। जब महाभारत उसे स्वयं पद्मनाभ के मुखपदम् से निःसृत अर्थात भगवान की वाणी, यानी भगवद्गीता कह रहा था तो वह उसके काल-निरपेक्ष सार्वकालिक महत्व का ही प्रतिपादन कर रहा था। गीता एक किताब नहीं, हमारी विचार परम्परा की शब्दकाया है, शायद यही दर्ज करने के लिए बार-बार कहा जाता है कि इसमें सभी उपनिषदों का सार समाहित है। इसलिए गीता किसी एक विचारधारा का प्रतिपादन नहीं करती, जीवन की व्याख्या किसी एक तरह से नहीं करती और मोक्ष पाने के लिए किसी एक ही मार्ग पर बल नहीं देती। भारतीय जीवन विश्व के अन्यान्य धार्मिक सम्प्रदायों की एक ही तरह की आचार, इश्वर के एक ही साकार स्वरूप या धर्मसंहिता की एकनिष्ठता पर बल नहीं देती। हम अनेकान्तवादी हैं और जीवन को कई तरह से देखने परखने का हमारा स्वभाव है। गीता में विचारों की अनेकता है, समाधानों की विविधता है, मार्गों की विभिन्नता है तो यकीनन वह भारतीय जीवन का सही प्रतिनिधित्व करती है। हम जैसे जीवन के अभ्यस्त हैं, गीता इसी का प्रतिपादन करती है। वह हमारे जीवन का, हमारी थाती या हमारे सोच का अविभाज्य अंग बन गई है तो इसलिए कि वह महज कृष्णार्जुन सम्वाद नहीं, हमारे ही जीवन का राग है। इसलिए यह कहते रहना गीता के मर्म का अनादर होगा कि यह उसका मूल रूप है और यह प्रक्षिप्त।

(साभार नवभारत टाइम्स)

सीमान्त गांवों के लिए बनाएं ठोस कार्ययोजना : गर्ब्याल

देहरादून। सचिव ग्राम्य विकास धीराज गर्ब्याल ने सभी जनपदों के मुख्य विकास अधिकारियों के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना, मुख्यमंत्री सीमान्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम एवं वाइब्रेट विलेजेज कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा की। साथ ही ठोस कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए।

बैठक में सचिव ने स्पष्ट किया कि कार्ययोजना बनाते समय आजीविका सृजन गतिविधियों को प्राथमिकता दी जाए। प्रत्येक चिन्हित विकासखण्ड में कम से कम एक मदर पोल्ट्री यूनिट की स्थापना तथा स्थानीय स्तर पर मत्स्य पालन, पशु पालन, मधुमक्खी पालन, सामुदायिक पर्यटन, प्रसंस्करण आदि गतिविधियों को प्रोत्साहित करने पर विशेष जोर दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली जानवरों से फसल सुरक्षा हेतु चेनलिंक फेसिंग के प्रस्ताव भी शामिल करने के निर्देश दिए गए ताकि पलायन रोकने और रिवर्स पलायन को बढ़ावा देने में मदद मिल सके।

सीमान्त जनपद चमोली, उत्तरकाशी, पिथौरागढ़, चम्पावत एवं उधमसिंह नगर की योजनाओं की अलग से प्रगति की समीक्षा की गई। सचिव ने निर्देश दिए कि बॉर्डर एरिया के गाँवों के लिए क्लस्टर आधारित ग्राम संतृप्तीकरण कार्ययोजना तैयार की जाए।

पुरुष कल्याण मंत्रालय बनाने की मांग

हल्द्वानी। एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था के अध्यक्ष योगेन्द्र साहू व सदस्य खुशी नागर के नेतृत्व में संस्था के पदाधिकारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के अवसर पर सिटी मजिस्ट्रेट के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पुरुष आयोग और पुरुष कल्याण मंत्रालय बनाने का ज्ञापन सौंपा। संस्था का कहना है कि महिलाओं को सुरक्षा के लिए बनाए गए विशेष अधिकारों के कानूनों का कुछ लोग दुरुपयोग कर रहे हैं और निर्दोष पुरुषों को झूठे मामलों में फंसाकर आर्थिक और मानसिक रूप से परेशान कर रहे हैं। कहा कि कई बार पुरुष अपने निर्दोष होने के प्रमाण देने के बावजूद न्याय नहीं पा पाते और झूठे मामलों में उनसे लाखों की मांग की जाती है। ऐसे में पुरुषों पर मानसिक तनाव बढ़ता है और कई बार वे आत्महत्या जैसी घटनाओं के लिए मजबूर हो जाते हैं। साथ ही उन्होंने मांग की कि सरकार पुरुष आयोग और पुरुष कल्याण मंत्रालय की स्थापना करे। इसके तहत झूठे मामलों में फंसे पुरुषों की क्षतिपूर्ति, अलग बजट का प्रावधान और सरकारी योजनाओं का कियान्वयन किया जाए ताकि पुरुष आत्महत्या जैसी घटनाओं से बच सकें। ज्ञापन देने वालों में बलराम हालदार, सुनीता तिवारी, मनीष साहू, पूजा जोशी, नमन तिवारी, मोनिका आर्या, एकता पाण्डे आदि थे।

मुनस्यारी महोत्सव की तैयारियां

मुनस्यारी। आगामी 2 दिसम्बर से होने वाले मुनस्यारी महोत्सव की तैयारियां होने लगी हैं। महोत्सव समिति ने बताया है कि तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम के अलावा दस दिवसीय व्यापारिक मेले का आयोजन किया जायेगा। इस वर्ष भी मुनस्यारी की लोक सांस्कृतिक व संस्कृति तथा महिला मंगल दलों द्वारा सुन्दर झांकी के साथ इसकी शुरुआत होगी।

सिद्धेश्वर दिलंक मेला सम्पन्न

उत्तरकाशी। डुंडा ब्लाक के पुजरगांव में धनारी में पारम्परिक सिद्धेश्वर दिलंक मेला हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मेले का खास आकर्षण का केन्द्र में जलते हुई आग रही। जिसके बीच युवक पेड़ पर चढ़ते हैं और अपनी जान पर खेल कर इस परम्परा को निभाते हैं। भगावान सिद्धेश्वर के प्रति आस्था के इस मेले के दौरान ग्रामीणों ने परम्परागत नृत्य कर क्षेत्र सुख समृद्धि की कामना की।

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
नरेन्द्र सिंह रावत
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल
माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न.
8958525979,
9411134775
फोन सम्पर्क-
05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग
मैटीरियल, जनरल आर्डर
सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

हरीश फर्सवान

(पुत्र स्व.कैप्टन दरवान सिंह फर्सवान)

ग्वालदम (चमोली)

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION	LIVE MUSIC	HOMELY FOOD	BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in मो. 9760007148

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

के०एस० रावत

वृन्दावन विहार मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

शारदा पब्लिक स्कूल

कैंट, अल्मोड़ा

शेखर लखचौरा

एडवोकेट

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)